eISSN:2581-4885
DEV SANSKRITI VISHWAVIDYALAYA PUBLICATION

RESEARCH ARTICLE

प्राचीन और आधुनिक भारत में विशाल यज्ञों द्वारा धार्मिक पर्यटन

अवनेंदु पराशर [1], मोनिका पांडेय [1], आशीष कुमार [1*]

[1] पर्यटन प्रबंधन विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, भारत

सारांश: प्राचीन एवं आधुनिक भारत में विशाल यज्ञ न केवल धार्मिक क्रियाओं के रूप में प्रतिष्ठित हैं, बल्कि वे बहुपहलु और समृद्धिकरण पर्यटन अनुभवों के लिए उत्कृष्टता का कारण भी हैं। सम्पूर्ण रामायण यज्ञ से अनुपूरित है तथा भगवान राम का जन्म पुत्रेष्टि यज्ञ के यज्ञीय वातावरण में होता है। महाभारत में यज्ञों के महत्व को दर्शाने वाले अनेक श्लोक हैं, जिनमें यह स्पष्ट किया गया है कि यज्ञ न केवल धार्मिक अनुष्ठान हैं, बल्कि आत्मिक और सामाजिक कल्याण के हेतु भी हैं। आधुनिक भारत में विशाल यज्ञ एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधि है जो समाज को एक साथ लाने और आध्यात्मिक सांस्कृतिक अनुभव को प्रोत्साहित करने का एक साधन है। अखिल विश्व गायत्री परिवार, विश्व हिंदू परिषद, आर्य समाज तथा अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित महायज्ञ, सांस्कृतिक समरसता और आध्यात्मिक चेतना का केंद्र बनते हैं। विशाल यज्ञों से धार्मिक पर्यटन को बल मिलता है, जो आर्थिक विकास, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, राष्ट्रीय एकता, और आध्यात्मिक मूल्यों के सतत प्रचलन को सुनिश्चित करता है। यज्ञों के माध्यम से तीर्थयात्री विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं का आदान–प्रदान करते हैं और समाज में समरसता तथा समन्वय को बढ़ावा देते हैं। जब भारत आधुनिक युग की जटिलताओं का सामना करता है, तो इन यज्ञों की सार्थकता विभिन्न और आध्यात्मिक समाज का रूपांतरण करने में एक मूल स्तम्भ बनी रहती है। यह शोध लेख यज्ञों और धार्मिक पर्यटन पर उनके परिवर्तनात्मक प्रभाव के माध्यम से भारत के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत की समग्रता को उजागर करता है।

कूट शब्द: यज्ञ, धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक समरसता, आध्यात्मिक मूल्य, राष्ट्रीय एकता, आर्थिक प्रभाव, वैदिक परंपरा

*CORRESPONDENCE
Address Department of Tourism Management, Dev Sanskriti University, India
Email: ashish.pawar@dsvv.ac.in

PUBLISHED BY
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya Gayatrikunj-Shantikunj Haridwar, India

OPEN ACCESS
Copyright (c) 2025 Parashar, Pandey, Kumar
Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

प्रस्तावना

धार्मिक पर्यटन एक ऐसी यात्रा को दर्शाता है जिसमें कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों की ओर यात्रा करता है ताकि वे आध्यात्मिकता, सांस्कृतिक परंपरा और धार्मिक मान्यताओं का अनुभव कर सकें [1]। भारत में धार्मिक पर्यटन का एक प्राचीन इतिहास है [1, 2], जो धार्मिक प्रेरणा से प्रेरित होता है, जिसमें धार्मिक सम्मेलनों की यात्रा भी सम्मिलित होती है। भारत में धार्मिक पर्यटन और यात्राओं का विशेष महत्व है, और यज्ञ धार्मिक यात्राओं का ही एक अंग है। यज्ञ का आयोजन विभिन्न धार्मिक संगठनों में, समाज के उत्थान हेतु, और परंपरागत मूल्यों को स्थापित करने के एक माध्यम के रूप में किया जाता है। यह सम्पूर्ण समुदाय को एक साथ लाने और उन्हें सशक्त बनाने का भी एक माध्यम है। इसके अलावा, यज्ञ का आयोजन धार्मिक सम्प्रदायों के साथ नेतृत्व, सहयोग और संबंधों को मजबूत करने का भी एक माध्यम होता है। दीर्घकालिक धार्मिक पर्यटन में कुछ दिनों या सप्ताहों तक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय तीर्थ स्थलों या सम्मेलनों की यात्राएं सम्मिलित होती हैं। धार्मिक पर्यटन के विभिन्न संगठनात्मक पहलुओं में भाग लेने वाली संख्या, यातायात का चयन, मौसमी यात्रा, और सामाजिक संरचना की परिभाषा इसके विभिन्न रूपों को निर्धारित करती है [3]।

यज्ञ और उसके महत्व को संस्कृति के संरक्षण और प्रसार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है, और भारतीय धर्म को 'यज्ञ का पिता' कहा जाता है [4]। यज्ञ, उदात्त कर्मों के लिए प्रेरणादायक क्रिया तथा भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। सामाजिक जीवन में सामुदायिकता, सहयोग, अनुशासन, संगठन, समानता आदि के गुण, और व्यक्तिगत जीवन में शुद्धता, वीरता, उत्साह, उच्चतम प्रगतिशीलता, त्याग, यज्ञ आदि भारतीय यज्ञ से उत्पन्न होने वाले आवश्यक गुण हैं [5]। भारतीय समुदाय में यज्ञ देश, समाज और व्यक्तियों के उत्थान का प्रतीक है [6]। प्राचीन यज्ञ सिद्धांत सामाजिक मूल्यों की पुनर्स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्राचीन भारत में विशाल यज्ञ

भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में रामायण सर्वोपरि ग्रंथ है। इसमें यज्ञों के विभिन्न उपक्रमों को नाना प्रकार से दर्शाया गया है। रामायण वास्तव में यज्ञ के विषय पर केंद्रित है [6]। रामायण के विभिन्न खंडों में यज्ञीय संस्कृति की परिपूर्ण चर्चा देखने को मिलती है। सम्पूर्ण रामायण यज्ञ से अनुपूरित है। भगवान राम का जन्म पुत्रेष्टि यज्ञ के यज्ञीय वातावरण में होता है।

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड के 188वें दोहे की पाँचवीं पंक्ति में वर्णित है कि – सृंगी ऋषिहि वसिष्ठ बोलावा, पुत्रकाम सुभ जग्य करावा। भगति सहित मुनि आहुति दीन्हे, प्रगटे अगिनि चरु कर लीन्हे।। [7]

ऋषि विश्वामित्र भगवान राम को ऋषियों और यज्ञ की रक्षा हेतु अयोध्या से ले गए, जिसका वर्णन रामचरितमानस के 209वें दोहे की प्रथम व द्वितीय पंक्ति में किया गया है – प्रात कहा मुनि सन रघुराई, निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई। होम करन लागे मुनि झारी, आपु रहे भरत की रखवाली।। [8]

उनके पूरे जीवन में विभिन्न यज्ञों का महत्वपूर्ण स्थान रहा, जैसे – अग्निष्टोम, अतिरात्र, गोमेधादि यज्ञ, वाजपेय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ आदि। अंत में उन्होंने स्वयं ही अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकांड के चौरासीवें सर्ग में अश्वमेध का वर्णन आया है – अश्वमेधो महायज्ञ: पावन: सर्वपापमानाम् [9]।

यज्ञ करने से क्या लाभ है, इस विषय पर महाभारत के चतुर्दश पर्व – अश्वमेधिक पर्व में अनेक सुंदर श्लोक उपलब्ध होते हैं। शांतिपर्व में लिखा गया है कि जो दैविक कृत्य करता है और जो विशाल पितृ यज्ञ व भूतयज्ञ करता है, वह संन्यास आश्रम में प्रवेश करता है [10]। आपद्धर्मपर्व के 151वें अध्याय के आठवें श्लोक में भीष्म पितामह यज्ञ को आवश्यक कर्तव्य बतलाते हैं और चेतावनी देते हैं – "अज्ञा असु लोकं प्रभवन्ति कथंचन" – जो यज्ञ नहीं करते, वे इस लोक अर्थात परलोक को प्राप्त नहीं करते [11]। राजधर्मानुशासन पर्व के 60वें अध्याय के 53वें श्लोक में कहा गया है – "अश्वमेधो महायज्ञ: प्रायश्चित्तमुहतं।" अश्वमेध नाम का महायज्ञ इस पाप का प्रायश्चित कहा गया है। महाभारत में जिन यज्ञों का उल्लेख है, उनके नाम हैं – अश्वमेध यज्ञ, राजसूय यज्ञ, पुण्डरीक यज्ञ, गवामयन यज्ञ, अतिरात्र यज्ञ, वाजपेय यज्ञ, अग्निजित यज्ञ एवं बृहस्पति यज्ञ आदि [12]।

प्राचीन काल में भारत भूमि में घर–घर यज्ञ होते थे [13]। नित्य यज्ञ के अतिरिक्त भी कुछ उत्सव, पर्व, त्यौहार आदि विभिन्न अवसरों पर बड़े–बड़े यज्ञ होते थे। इनके अतिरिक्त बड़ी विपत्ति के निवारण हेतु अथवा किसी बड़े प्रयोजन की सफलता के लिए भी अनेक विधि–विधान से सुसंबद्ध यज्ञ किए जाते थे। इस प्रकार के यज्ञों तथा उनके सत्परिणामों से भारतीय इतिहास–पुराणों का पन्ना–पन्ना भरा पड़ा है। अथर्ववेद में यज्ञ के महत्व को इस प्रकार वर्णित किया गया है – "अग्निहोत्रिणे प्रणुदे सपत्रान्।" [14] (अथर्ववेद 9/2/6) अर्थात यज्ञ करने से शत्रु नष्ट हो जाते हैं। शत्रुता को मित्रता में बदल देने का सर्वोत्तम उपाय यज्ञ है। अथर्ववेद में कहा गया है – हे ब्रह्मणस्पते! चारों वेदों के विद्वान! तू अब उठ खड़ा हो, आलस्य मत कर। उठ और यज्ञों द्वारा विश्व की दैवी शक्तियों को जागृत कर, और उन जागृत हुई शक्तियों द्वारा यजमान को सब प्रकार के सुखमय साधनों से सम्पन्न कर [15]।

ऋग्वेद के अनुसार – "प्राचं यज्ञं प्रणतया स्वसाय।" (10/101/2) अर्थात प्रत्येक शुभ कार्य यज्ञ के साथ आरंभ करो। यज्ञ के साथ आरंभ किए गए कार्य सफल और सुखदायक होते हैं [16]। ऋग्वेद के 5/8/7वें मंत्र में कहा गया है – हे यज्ञाग्ने! तुझे ज्ञानीजन सबके सुख की कामना करते हुए उत्तम समिधा और घृतादि पदार्थों से यज्ञ वेदी में प्रकाशित

करते हैं, और तू यज्ञ में घृतादि औषधियों द्वारा सींचा हुआ, रोग के कीटाणुओं से मुकाबला कर उन्हें नष्ट कर देता है [17]।

आधुनिक भारत में विशाल यज्ञ

वर्तमान समय में यज्ञ या हवन धार्मिक कार्यों के साथ किया जाता है, जैसे – सत्यनारायण कथा, भागवत कथा, रामायण पाठ आदि। विशिष्ट यज्ञ (या हवन) वैदिक और तांत्रिक साधना–अनुष्ठानों से संबंधित होते हैं [18]। आधुनिक भारत में विशाल यज्ञ एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधि है, जो समाज को एक साथ लाने और आध्यात्मिक–सांस्कृतिक अनुभव को प्रोत्साहित करने का एक साधन है। यह विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक आयामों को समृद्धि और समरसता की दिशा में आगे बढ़ाता है। विशाल यज्ञों में जन–साधारण की भावनाओं, सांस्कृतिक विविधता की ऊर्जा, और धार्मिक संबंधों की महत्वपूर्णता को उजागर किया जाता है। इन यज्ञों में लोग सामाजिक एकता और सांस्कृतिक समरसता का परिचय देते हैं तथा आपसी समर्थन और सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करते हैं। ये विशाल यज्ञ धार्मिक तथा सांस्कृतिक आयोजनों से जुड़े होते हैं, जो धार्मिक विद्या और अध्ययन को बढ़ावा देने की एक आदर्श प्रणाली प्रदान करते हैं। इनमें से कई यज्ञ वेदांत, योग और ध्यान की परंपराओं से जुड़े होते हैं, जो आधुनिक जीवन में आत्म–कल्याण और आध्यात्मिक उन्नति को प्रोत्साहित करते हैं। इन विशाल यज्ञों के माध्यम से आधुनिक भारत में धार्मिक सामरस्य और एकता की भावना को समर्थन देने का प्रयास किया जाता है, जो समृद्धि और कल्याण की दिशा में समाज को प्रेरित करता है।

आधुनिक भारत में कई प्रकार के विशाल यज्ञ और धार्मिक आयोजन होते हैं, जो विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भों में समर्पित होते हैं। यहां कुछ प्रमुख उदाहरण हैं:

आधुनिक भारत में कई यज्ञाग्निक आध्यात्मिक गुरु, आध्यात्मिक संस्थाओं के माध्यम से, आधुनिक समय में अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करते हैं, जिसमें विशेष रूप से वेद मंत्रों का पाठ किया जाता है [19]। अखिल विश्व गायत्री परिवार, जो एक विश्वव्यापी आध्यात्मिक संस्था है, उसके द्वारा समय–समय पर विभिन्न महायज्ञों का आयोजन किया जाता है [20]। विश्व हिन्दू परिषद के समारोहों में भी विशाल यज्ञों का महत्वपूर्ण स्थान है। यह एक व्यापक स्तर पर आयोजित समारोह होता है, जिसका उद्देश्य हिन्दू धर्म, संस्कृति और समाज को बढ़ावा देना होता है [21]। आधुनिक भारत में आर्य समाज के शुद्धि महायज्ञ का भी प्रमुख स्थान है। आर्य समाज ने भारतीय समाज में शुद्धि महायज्ञ को बढ़ाने के लिए कई आयोजन किए हैं। इनमें वेद मंत्रों का पाठ, धार्मिक उपदेश और यज्ञ–हवन शामिल होते हैं [22]। भारत के कई स्थानों पर गो–सेवा महायज्ञ आयोजित किए जाते हैं, जिनमें गोपालकों के माध्यम से यज्ञ और गौशालाओं की स्थापना का समर्थन किया जाता है। इनमें वेद मंत्रों का पाठ और गौ–पूजन शामिल होता है [23]।

इन प्रमुख यज्ञों के अलावा, कई युवा संगठन और साधु–संत महात्मा युवाओं के बीच आत्म–निर्माण और धार्मिकता को बढ़ावा देने के लिए युवा सम्मेलन और यज्ञ आयोजित करते हैं। इनमें सत्संग, ध्यान और साधना की कार्यशैली शामिल होती है। विभिन्न आध्यात्मिक संगठनों और आचार्यों द्वारा आयोजित सम्मेलन और हवन, जिनमें आध्यात्मिक जागरण, सत्संग और मानवता के लिए सेवा का संदेश दिया जाता है [24]। कई स्थानों पर विशेषज्ञ यज्ञ और धार्मिक महोत्सव आयोजित किए जाते हैं, जिनमें विशिष्ट विद्याक्षेत्रों के आचार्यों का सम्मान किया जाता है और विचार–विमर्श होता है।

इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि आधुनिक भारत में विभिन्न प्रकार के यज्ञ और धार्मिक आयोजन होते हैं, जो सामाजिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

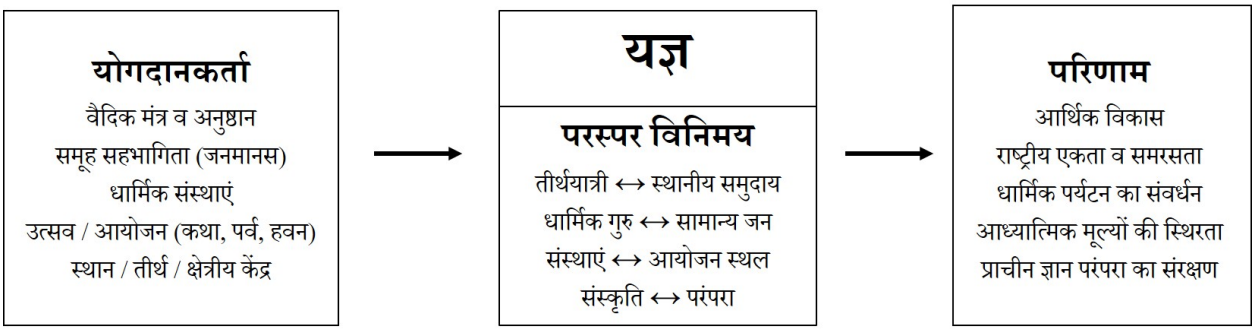

चित्र 1 : यज्ञ–आधारित धार्मिक पर्यटन

धार्मिक पर्यटन के सन्दर्भ में विशाल यज्ञों के परिणाम

इस लेख का उद्देश्य इन धार्मिक यज्ञों के बहुपक्षीय पहलुओं को स्पष्ट करना और धार्मिक पर्यटन को प्रोत्साहित करने में उनके योगदान को प्रकट करना है। यह अनुसंधान भारत में विशाल यज्ञों के धार्मिक पर्यटन पर उनके सर्वांगीण प्रभाव का अध्ययन करता है, जिसमें आर्थिक विकास, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, राष्ट्रीय एकता और आध्यात्मिक मूल्यों के सतत प्रचलन को ध्यान में रखा गया है।

आर्थिक बढ़ोतरी और व्यापार की वृद्धि

विशाल यज्ञों से स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को प्रोत्साहन मिलता है और पर्यटन संबंधित उद्योगों को बढ़ावा मिलता है। यज्ञों के माध्यम से धार्मिक पर्यटन से समृद्ध सांस्कृतिक आदान–प्रदान होता है। इन यज्ञों का आयोजन विविधता का एक संगम स्थल बनता है, जो विभिन्न क्षेत्रों, पृष्ठभूमियों और भाषाई समुदायों के लोगों के बीच एकता को बढ़ावा देता है। विशाल यज्ञों में भागीदारी से सनातन धर्म में समाहित दार्शनिक और आध्यात्मिक मूल्यों का स्थायी प्रचलन बना रहता है। तीर्थ यात्रियों की बढ़ी हुई संख्या से विभिन्न क्षेत्रों के बीच व्यापार और वाणिज्य में वृद्धि होती है, जिससे आर्थिक विकास होता है।

सांस्कृतिक प्रथाओं की विविधता

यज्ञों के माध्यम से धार्मिक पर्यटन विभिन्न प्रांतों और समुदायों से आए तीर्थयात्रियों को एक स्थान पर एकत्र करता है, जिससे वे अपनी सांस्कृतिक परंपराएं साझा करते हैं। यह विभिन्न भाषाओं, वस्त्रों और सांस्कृतिक प्रथाओं की विविधता को बढ़ाता है और सांस्कृतिक समृद्धि को प्रोत्साहित करता है। यह सामाजिक और राजनीतिक–भौगोलिक मेल–जोल तथा राष्ट्र–निर्माण में सहायक होता है।

भारतीय विविधता और यज्ञ

यज्ञों में भाग लेने वाले तीर्थयात्री विभिन्न धार्मिक रीति–रिवाज, परंपराएं, मत, उपासना पद्धतियां और आचार–विचारों को मानने वाले होते हैं। ऐसे आयोजनों में वे एक–दूसरे से अपने विचार साझा करते हैं। यज्ञ आपसी संवाद के माध्यम से सांस्कृतिक एकता और समरसता की भावना को बढ़ावा देता है और भिन्न सांस्कृतिक समृद्धि को समर्थन करता है। भारत की विविधता में यज्ञ, राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में कार्य करते हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों, भाषाई पृष्ठभूमियों और सामाजिक वर्गों से लोगों को एकत्र करते हैं। यह सामाजिक समन्वय और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करता है, जिससे एकीकृत और सामूहिक पहचान उत्पन्न होती है।

दार्शनिक और आध्यात्मिक मूल्यों का स्थायित्व

तीर्थ यात्रियों और सहभागियों की सक्रिय भागीदारी से वे केवल रीति–रिवाजों में ही भाग नहीं लेते, बल्कि आध्यात्मिक शिक्षाओं पर चर्चा और विचार–विमर्श में भी संलग्न होते हैं। इससे भारतीय प्राचीन ज्ञान के संरक्षण में योगदान होता है। यज्ञों में व्यापक भागीदारी से सनातन धर्म में समाहित दार्शनिक और आध्यात्मिक मूल्यों का सतत प्रचलन बना रहता है, जिससे भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा का संरक्षण होता है।

यज्ञों का सांस्कृतिक समृद्धि में योगदान इस प्रकार है कि ये सुनिश्चित करते हैं कि आध्यात्मिक मूल्य विभिन्न समुदायों में समान रूप से प्रचलित रहें। विभिन्न क्षेत्रों, भाषाई पृष्ठभूमियों और सामाजिक वर्गों से लोगों के एक साथ आने से राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है, जिससे समन्वय और एकता की भावना उत्पन्न होती है।

निष्कर्ष

इस प्रकार धार्मिक यज्ञों के बहुपक्षीय पहलू स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। प्रस्तुत शोध लेख में भारत में विशाल यज्ञों के धार्मिक पर्यटन पर उनके सर्वांगीण प्रभाव का अध्ययन किया गया है, जिसमें आर्थिक विकास, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, राष्ट्रीय एकता और आध्यात्मिक मूल्यों के सतत प्रचलन को सम्मिलित किया गया है।

प्राचीन एवं आधुनिक भारत में विशाल यज्ञ न केवल धार्मिक क्रियाओं के रूप में प्रतिष्ठित हैं, बल्कि वे बहुपक्षीय और समृद्धिकरण पर्यटन अनुभवों के लिए उत्कृष्टता का कारण भी हैं। तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित करने में विशाल यज्ञों का आर्थिक विकास, सांस्कृतिक समझ, राष्ट्रीय एकता और गहरे आध्यात्मिक मूल्यों में महत्वपूर्ण योगदान है।

जब भारत आधुनिक युग की जटिलताओं का सामना करता है, तो इन यज्ञों की सार्थकता एक विविध और आध्यात्मिक समाज के रूपांतरण में मूल स्तंभ बनी रहती है। यह शोध लेख यज्ञों और उनके धार्मिक पर्यटन पर परिवर्तनात्मक प्रभावों के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत की जटिलताओं का वर्णन करता है।

भारत में विशाल यज्ञ आर्थिक बढ़ोतरी और व्यापार की वृद्धि, सांस्कृतिक विविधता और परंपराओं के आदान–प्रदान, विविधता में एकता तथा राष्ट्र निर्माण, और आध्यात्मिक मूल्यों के प्रचलन के प्रतीक हैं। ये व्यापक यज्ञ न केवल आध्यात्मिक शांति की खोज में लगे तीर्थयात्रियों को आकर्षित करते हैं, बल्कि आर्थिक विकास, सांस्कृतिक समझ, राष्ट्रीय एकता और आध्यात्मिक मूल्यों के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान भी प्रदान करते हैं।

जब भारत आधुनिक युग में अग्रसर होता है, तब इन यज्ञों की परिकल्पना एक समर्थ, सजग, सर्वांगीण और आध्यात्मिक समाज के निर्माण में एक प्रमुख भूमिका निभाती है।

doi.org/10.36018/ijyr.v8i1.138

Compliance with ethical standards Not required.
Conflict of interest The authors declare that they have no conflict of interest.

सन्दर्भ

[1] Agarwal P, Parashar A. Development of holistic religious tourism through ancient Indian technique of Yagya: Exploration with Ashwamedha Yagya. Interdisciplinary Journal of Yagya Research. 2022;4(2):7–16. Link

[2] कुमार आ, पाण्डेय म, काबिया ए क. भारत में आध्यात्मिक पर्यटन के परिप्रेक्ष्य में यज्ञ की भूमिका, महत्व एवं संभावनाएं: Role, importance and possibilities of Yagya in the perspective of spiritual tourism in India. Interdisciplinary Journal of Yagya Research. 2018;1(2):1–6. Link

[3] Timothy DJ, Olsen DH, editors. Tourism, religion and spiritual journeys. Vol. 4. London: Routledge; 2006.

[4] Sharma S. यज्ञीय संस्कृति का संरक्षण और प्रसार, वाल्मीकि रा–मायण से प्रगतिशील प्रेरणा. Mathura: Yug Nirman Yojna, Gayatri Tapo Bhumi; 1975.

[5] Chaube RK, Choubey VK, Saxena P, Solanki K, Tiwari RVC, Tiwari H. Scientific rationale of Yagya: a review. Int J Community Med Public Health [Internet]. 2020;7:2831–2835. Link

[6] Sharma S. Ramayan ki Pragatisheel Prernayen. Vangmay No. 32. Mathura: Akhand Jyoti Sansthan; 1995.

[7] Sharma S. Ramayan ki Pragatisheel Prernayen. Vangmay No. 32. Mathura: Akhand Jyoti Sansthan; 1995. p. 2.144.

[8] Sharma S. Ramayan ki Pragatisheel Prernayen. Vangmay No. 32. Mathura: Akhand Jyoti Sansthan; 1995. p. 2.145.

[9] Sharma DP. श्रीमद् वाल्मीकि रामायण, उत्तरकाण्ड, चौरासीवाँ सगर्. इलाहाबाद: राम नारायण लाल; 1927.

[10] Goswami Tulsidas. Ramcharitmanas. Doha No. 188. Gorakhpur: Govind Bhawan Karyalaya Unit–Gita; 2014.

[11] Goswami Tulsidas. Ramcharitmanas. Doha No. 209. Gorakhpur: Govind Bhawan Karyalaya Unit–Gita; 2014.

[12] Sharma S. Ramayan ki Pragatisheel Prernayen. Vangmay No. 32. Mathura: Akhand Jyoti Sansthan; 1995.

[13] Sharma S. Yagya ka Gyan Vigyan. Vangmay No. 25. Mathura: Akhand Jyoti Sansthan; 1998.

[14] Sharma S. अथर्ववेद संहिता, 9/2/6. Mathura: Yug Nirman Yojana; 2009.

[15] Sharma SR. वेदों में स्वर्णिम सूक्तियां. Mathura: Vedmata Gayatri Trust; 2013. p. 38.

[16] Sharma SR. वेदों में स्वर्णिम सूक्तियां. Mathura: Vedmata Gayatri Trust; 2013. p. 38.

[17] Acharya S. Bharatiya Sanskriti ke Adharbhut Tatva. Vangmay No. 34. Mathura: Akhand Jyoti Sansthan; 1995.

[18] Pandya P. Reviving the Vedic Culture of Yagya. Haridwar: Vedmata Gayatri Trust, Shantikunj; 2001.

[19] Sharma SR. वेदों में स्वर्णिम सूक्तियां. Mathura: Vedmata Gayatri Trust; 2013. p. 39.

[20] Singh S. वैदिक संस्कृति में यज्ञ–एक समग्र जीवन दर्शन एवं साधना पथ. Interdiscip J Yagya Res. 2019;2(2):1–6.

[21] Dharm S. Global Hinduism. Identity (Distortion Appropriation). Internet: 2019; Link

[22] Vidyālaṅkāra S, Haridatta V, Bhāratīya B, Vidyālaṅkāra DT. आर्य समाज का इतिहास. Haridwar: आर्य स्वाध्याय केन्द्र; 1988.

[23] Shri Laxmi Gopushthi Mahayagya. Patrika [Internet]. [cited 2025 Jun 12]. Link

[24] Rinschede G. Forms of religious tourism. Annals of Tourism Research, 1992;19(1):51–67. Link